भालू और गिलहरी का बच्चा

स्टेन और जान बेरेनस्टेन



भाई भालू और बहन भालू को बगीचे में एक अनाथ बच्चा गिलहरी मिली.

"क्या हम इसे रख सकते हैं?" बच्चों ने पूछा.

"मुझे लगता है हमें उसे रखना ही होगा," माँ भालू ने कहा.

"बच्चों को खाना खिलाना और गर्म रखना ज़रूरी है," पिता भालू ने समझाया.

भूरी आँख को अपने चार पंजों पर खड़े होने में ज़रा भी देर नहीं लगी, और वह अपने आस-पास की दुनिया को, ज़्यादातर अपने तीखे दांतों से, तलाशने लगी. बहुत जल्द, भूरी आँख बच्चा नहीं रही. वह दुनिया में बाहर जाने के लिए तैयार थी. लेकिन क्या बच्चे उसे जाने देने को तैयार थे?



भालू और
गिलहरी का बच्चा



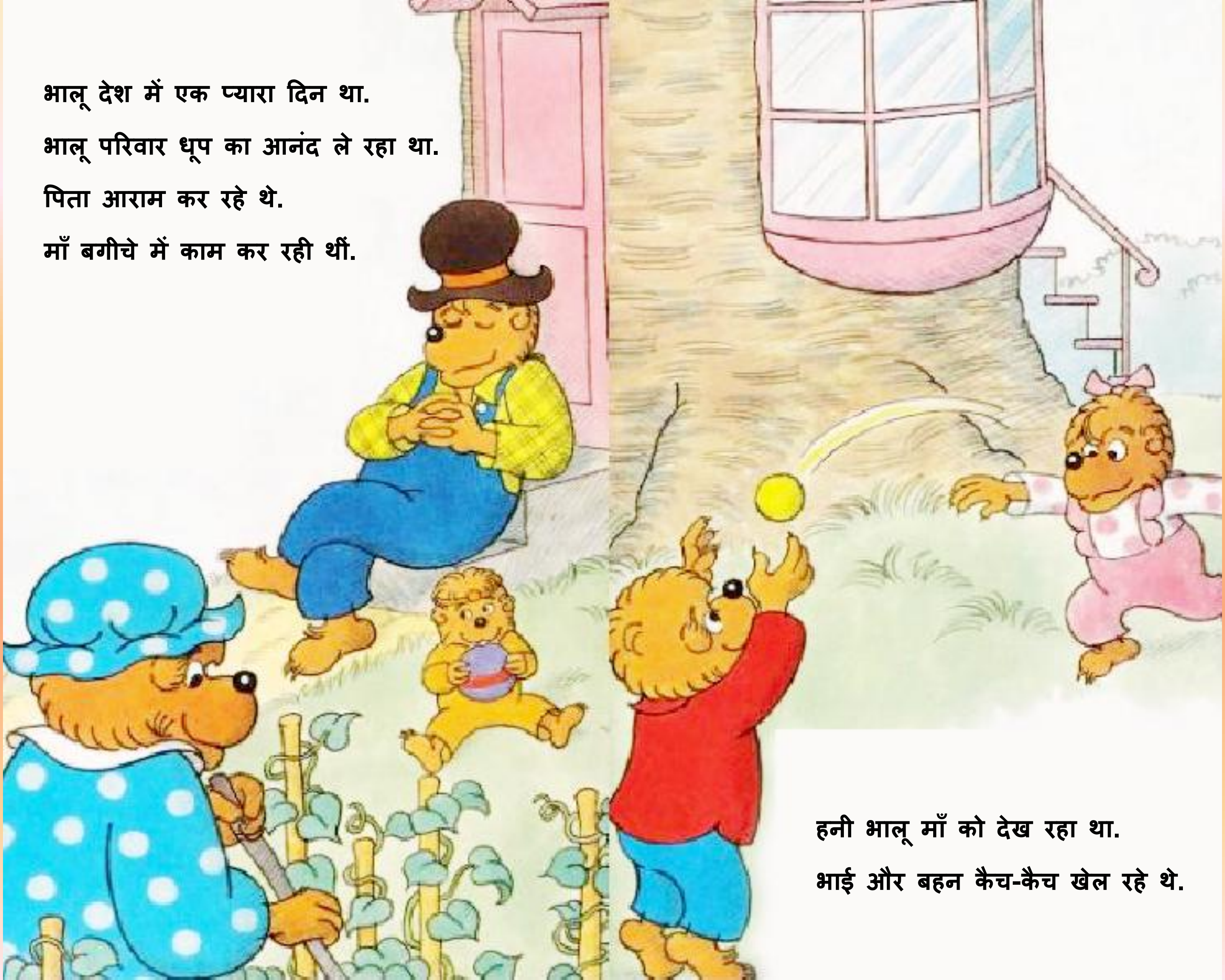
स्टेन और जान बेरेनस्टेन

भालू देश में एक प्यारा दिन था.

भालू परिवार धूप का आनंद ले रहा था.

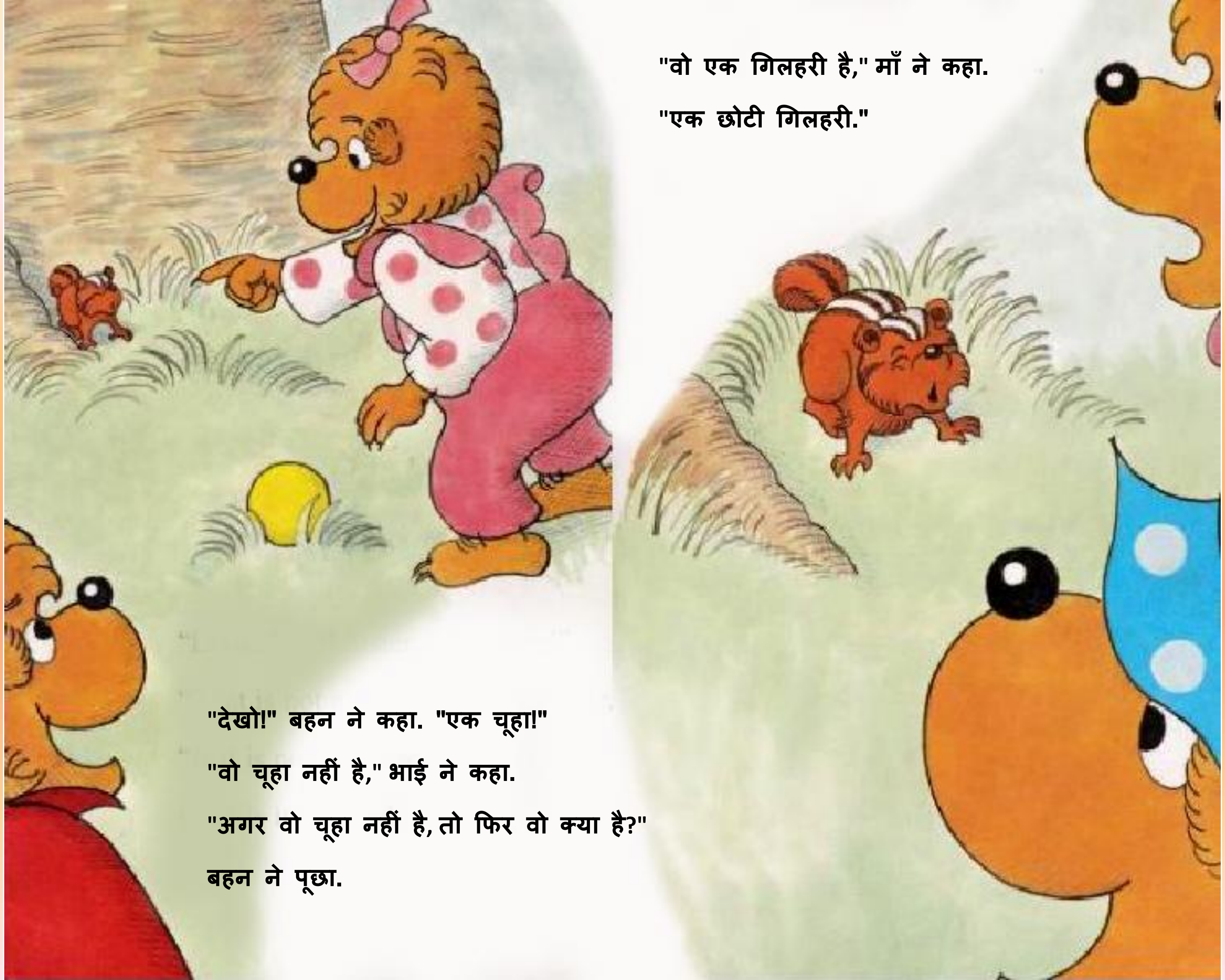
पिता आराम कर रहे थे.

माँ बगीचे में काम कर रही थीं.



हनी भालू माँ को देख रहा था.

भाई और बहन कैच-कैच खेल रहे थे.



"देखो!" बहन ने कहा. "एक चूहा!"

"वो चूहा नहीं है," भाई ने कहा.

"अगर वो चूहा नहीं है, तो फिर वो क्या है?"

बहन ने पूछा.

"वो एक गिलहरी है," माँ ने कहा.

"एक छोटी गिलहरी."

"क्या हम इसे रख सकते हैं? माँ?"

बहन चिल्लाई.

"क्या हम रख सकते हैं?

क्या हम रख सकते हैं?"

"देखो," भाई ने कहा.

"इसकी आँखें अभी तक खुली नहीं हैं."

"यह सही है," माँ ने कहा.

"इस बच्चे को अपनी माँ के साथ होना चाहिए.

लेकिन अगर माँ हमें देख लेगी तो फिर वह

नहीं आएगी. आओ, हम पेड़ के घर के पीछे

छिप जाते हैं. शायद फिर वह आए."





भालू देखते रहे.

लेकिन माँ गिलहरी नहीं आई.



"अब क्या हम इसे रख सकते हैं?" बहन चिल्लाई.

"क्या हम रख सकते हैं? क्या हम रख सकते हैं?"

"मुझे लगता है अब हमें उसे रखना ही होगा," माँ ने कहा.

"कम-से-कम कुछ समय के लिए तो ज़रूर."

"यह सही है," पापा ने कहा.

"इस बच्चे को दूध पिलाना और गर्म रखना ज़रूरी है."





"पापा, क्या आपके पास
एक साफ़ रूमाल है?" माँ ने पूछा.
माँ ने छोटी गिलहरी को उठाया
और उसे पापा के रूमाल में सुला दिया.



फिर वे छोटी गिलहरी को
घर के अंदर ले गए.



"बहन," माँ ने कहा. "कृपया अपनी
गुड़िया की एक बोतल लाओ.
भाई, कृपया थोड़ा दूध और शहद लाओ."





छोटी गिलहरी को बहुत भूख लगी थी.
जैसे ही उसने बोतल से दूध पिया,
उसने अपनी आँखें खोलीं.
वे बड़ी और भूरी थीं.



"चलो इसका नाम भूरी आँख रखते हैं,"
बहन ने कहा.
"यह नाम किसी भी अन्य नाम से बेहतर है,"
माँ ने कहा.



पापा सोने के लिए एक बक्सा लाए.

भाई ने उस पर बिस्तर बिछाया.





भूरी आँख को अपना नया बिस्तर पसंद आया.

बेबी हनी को उसे देखना बहुत अच्छा लगा.

जल्द ही भूरी आँख गहरी नींद में सो गई.

अगली सुबह, बहन और भाई
जल्दी उठ गए.
वे भूरी आँख को देखने के लिए
नीचे दौड़े.
वहाँ डिब्बा था.
लेकिन भूरी आँख नहीं थी.
उन्होंने चारों ओर देखा.

"वह वहां है!" भाई ने कहा.
भूरी आँख मेज़ पर थी.
उसने चीनी का कटोरा गिरा दिया था.
वह चीनी खा रही थी.
"मुझे लगता है उसे दूध और शहद से
ज़्यादा की ज़रूरत है." बहन ने कहा.







फिर भालू के बच्चे बाहर गए.

उन्होंने कुछ बीज लिए.

भूरी आँख बहुत छोटी थी.

लेकिन उसके बड़े-बड़े गिलहरी के दाँत थे.

जल्द ही सब बीज गायब हो गए.



भूरी आँख को खेलना बहुत पसंद था.

उसे सबसे ज़्यादा खोजबीन करना पसंद था.

उसने माँ के सब्ज़ी के शेल्फ की खोजबीन की.



उसने पापा की मेज़ की खोजबीन की.



उसने माँ की सिलाई की

टोकरी की खोजबीन की.



फिर एक दिन.

उसने एक जगह बहुत

ज़्यादा खोजबीन की.

वो पापा की पैंट की टांग में -

घुटने तक चढ़ गई!



वहां ऊपर उसने,

अपने बड़े, नुकीले दांतों को आज़माया.



"तुम्हें पता है मैं क्या सोचती हूँ?" माँ ने पूछा.

"मुझे लगता है भूरी आँख हमें कुछ बता रही है.

वह हमें बता रही है कि वह अब

दुनिया में बाहर जाने के लिए तैयार है.

वह अपने दोस्तों के साथ खेलने को तैयार है."



"लेकिन, माँ!" बहन ने कहा.

"मैं नहीं चाहती कि वह जाए!

मैं उससे बहुत प्यार करती हूँ!"



"हम सब उससे प्यार करते हैं," माँ ने कहा.

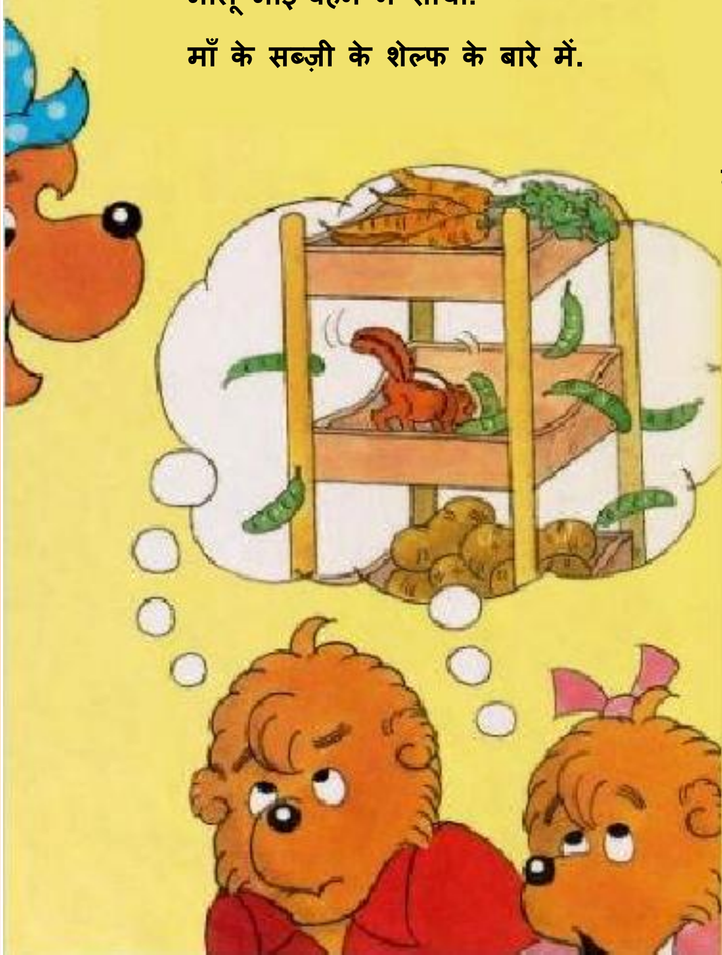
"लेकिन उसे पालतू बनाना उचित नहीं है.

गिलहरी को आज़ाद होना चाहिए.

उन्हें घूमने-फिरने की आज़ादी होनी चाहिए."



"अंदर घूमने-फिरने के लिए
ज़्यादा अच्छी जगहें नहीं हैं."
भालू भाई-बहन ने सोचा!
माँ के सब्ज़ी के शेल्फ के बारे में.



पापा की मेज़,



माँ की सिलाई की टोकरी,



और पापा की पैंट
की टांग के बारे में.

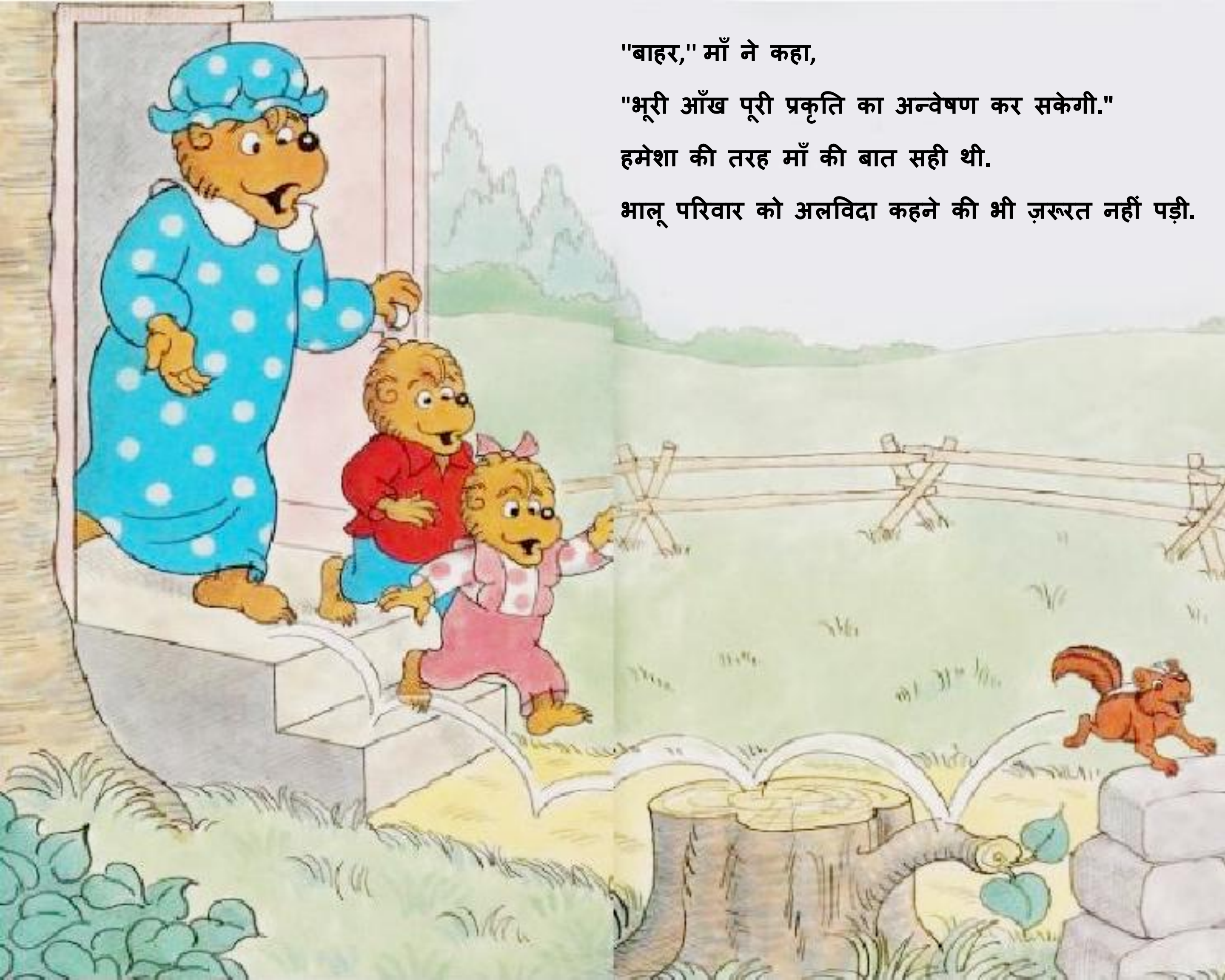


"बाहर," माँ ने कहा,

"भूरी आँख पूरी प्रकृति का अन्वेषण कर सकेगी."

हमेशा की तरह माँ की बात सही थी.

भालू परिवार को अलविदा कहने की भी ज़रूरत नहीं पड़ी.



वे उसे हर दिन

अपने दोस्तों के साथ खेलते

और प्रकृति की खोज करते देखते थे—

अपने ही आँगन में.



अंत